KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage, Campus, Mussallahpur,Patna - 06
Mob. : 8877918018, 8757354880

BPSC

संभावित निबंध

with Model Answer

Part 3

By : Dharmendra Sir

के निर्देशन में

संभावित निबंध

क्रम. सं०	निबंध का नाम	पेज. सं०
1.	''कृत्रिम बुद्धिमता : भविष्य का दौर या खतरे का आमंत्रण	03-04
2.	''जल है तो कल है''	05-06
3.	''बिहार में पर्यटन एवं संभावनाएं''	07-08
4.	''बिहार में कला और संस्कृति''	09-10
5.	''बिहार में स्टार्ट-अप और चुनौतियाँ''	11-12

❖❖❖

1. ''कृत्रिम बुद्धिमता : भविष्य का दौर या खतरे का आमंत्रण

''जो तकनीकी मानव हित को
ध्यान में रखकर बनायी गयी हो,
वही सर्वोत्तम तकनीकी है। कृत्रिम
बुद्धिमता उन्हीं तकनीकी में से एक है,
या फिर हम किसी दानव को
आमंत्रित कर रहे हैं।''

उपरोक्त कथन से तात्पर्य है विज्ञान-तकनीकी तभी तक अच्छा है, जब तक मानव मशीनी मानव से मानव के अस्तित्व पर संकट मंडराने लगेगा।

इससे स्पष्ट होता है कि तकनीकी नई उम्मीदों, आशाओं, अपेक्षाओं के साथ निराशा, भय आदि भी साथ लाती है। आज हम उन्हीं तकनीकी में से एक तकनीकी की चर्चा करेंगे, जिसका संबंध वर्तमान के साथ-साथ भविष्य से भी जुड़ा है। वह कोई और नहीं बल्कि ''कृत्रिम बुद्धिमता'' है जो अब तक के सभी तकनीकी और उसके अनुप्रयोगों से भिन्न है जो पहले से विद्यमान है।

कृत्रिम बुद्धिमता विज्ञान को वह शाखा है जो कम्प्यूटर को इंसानी की तरह व्यवहार करने से संबंधित है। कृत्रिम बुद्धिमता मशीनी को सोंचने, समझने, सीखने, समस्या को हल करने और निर्णय लेने जैसे ज्ञानात्मक कार्यों को करने की क्षमता की संदर्भित करता है।

कृत्रिम बुद्धिमता से जुड़े हुए शोद्य उच्च तकनीकी व विशिष्टों वाले है। इसकी मुख्य उद्देश्य कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग को निम्न मानवीय गुणों के आधार पर तैयार जैसे ज्ञान, तार्किकता समस्या-निवारण, पूर्वाग्रह, सीखना योजना बनाना है।

कृत्रिम बुद्धिमता शब्द को जॉर्ज मैकार्थी को जाता है। जिसे कृत्रिम बुद्धिमता का पिता भी कहा जाता है। इन्होंने प्रोग्रामिग भाषा (LISP) विकसित की। जो कृत्रिम बुद्धिमता कार्य को संयुक्त राज्य अमेरिका की प्रधान भाषा है। इसके पश्चात् PROLOG द्वि लौजिक प्रोग्राम भाषा फ्रांस के एलेन कॉलमेरूअर द्वारा बनाया Conciere किया गया है जहाँ पहली बार भाषा को 1973 में प्रत्यारोपित किया गया।

इसके माध्यम से सही अथवा गलत वाक्य की पहचान प्राप्त होती है। इसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमता के शोद्यकर्ता एडवर्ड फिगेनबम ने ह्यूरिस्टिक डेन्टरल पर कार्य शुरू किया जो, कि एक रसायन-विश्लेषी विशेषज्ञ सिस्टम था जो जटिल हाइड्रोकार्बन नाइट्रोजन के यौगिकों की गणना का अनुमान लगाया था, उसी प्रकार माइसिन जो कि रक्त के संक्रमण द्वारा बताए गए लक्षणों तथा मेडिकल जाँच परिणामों के आधार पर मरीज का निदान करता है।

जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमता की क्षमताओं में नाटकीय रूप से विस्तार हुआ वैसे-वैसे इसके क्षेत्रों की संख्या में इसकी उपयोगिता भी बढ़ी है।

वर्तमान समय में देखें तो कृत्रिम बुद्धिमता के आधार पर हमारी पसंदीदी स्ट्रीमिंग या शॉपिंग साइट पर हमें मिलने वाली सिफारिश में संग्रहित है। GPS मैपिंग प्रौद्योगिकी में, भविष्यवाणी पाठ में जो हमारे वाक्य को पूरा करता है, जब हम ई-मेल भेजने या वेब खोज को पूरा करने का प्रयास करते है।

इसके अलावा वर्तमान में जैसपर SOVAS चैटजीपीटी, लाम्डा, Socratic, ऐलेक्सा आदि का उपयोग फसल को पैदावार बढ़ाने, व्यापार उत्पादकता बढ़ाने, क्रेडिट तक बेहतर पहुँच बनाने, कैंसर का पता लगाने, में किया जाता है।

2030 तक विश्व अर्थव्यवस्था में 15 ट्रिलियन डॉलर से अधिक का योगदान कर सकता है जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 14% जोड़ता है। SDG पर कृत्रिम बुद्धिमता के प्रभाव की समीक्षा करते हुए नेचर में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया है कि AI सभी SDG लदयी में 134 मात्रक/79% पर एक सक्षमकर्ता के रूप में कार्य कर सकता है।

रे कुर्जवील के अनुसार ''कृत्रिम बुद्धिमता लगभग 2029 तक मानव स्तर तक पहुँच जाएगा। 2045 तक इसका पालन करें, तो हम अपनी सभ्यता की मानव जैविक मशीन इंटेलिजेंस को एक अरब गुणा बढ़ा देगी।''

आज के समय में बहुत से क्षेत्र है जहां कृत्रिम बुद्धिमता का इस्तेमाल किया जा रहा है, जैसे- स्वास्थ्य, शिक्षा, वित, आधारभूत संरचना के विकास, अंतरिक्ष शोद्य, अनुसंधान एवं विकास, हमारे दैनिक जीवन में जो हमारे भविष्य के निर्माण में सहायक हो रहा है।

स्वास्थ्य- कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा जटिल से जटिल बीमारियों का पता लगाने, मानव स्वास्थ्य की जाँच करने, ऑपरेशन करने आदि में किया जा रहा है। इसके अलावा कोविड-19 के दौरान हॉस्पिटल में जहाँ डॉक्टर नहीं जा पा रहे थे वहाँ पर कृत्रिम बुद्धिमता आधारित रोबोट का इस्तेमाल किया जाता था। मरीजों के पास दवाई, कपड़ा और खाना ले जाने के लिए भी।

शिक्षा- शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है। अभी हाल में विकसित चौटजीपीटी इंसानों की तरह प्रश्नों का उत्तर देना है इसके द्वारा कठीन सवालों को भी हल किया जा रहा है। इसके अलावा ऑनलाइन क्लास, ग्रेडिंग सिस्टम, ऑनलाइन परीक्षा, स्कूल में कृत्रिम बुद्धिमता रोबोट का भी इस्तेमाल होने लगा है जो शिक्षको के स्थान पर पढ़ाते है, साथ ही कई सारे ऑनलाइन

एजुकेशन प्लेटफार्म, एप्लीकेशन आ चुके है, जिनकी मदद से बच्चे खेल-खेल में पढ़ना-लिखना सीख सकते है अत: कुल मिलाकर भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमता पर आधारित शिक्षा व्यवस्था देखने को मिल सकती है।

औद्योगिक क्षेत्र- आज के समय में सभी औद्योगिक कंपनियां और वित्तीय संस्थाएं Data Analysis करने के लिए AI (कृत्रिम बुद्धिमता) का इस्तेमाल कर रही है। इसके पहले Data Analysis करने में काफी वक्त और पैसा जमा करना पड़ता था लेकिन अब AI प्रोग्राम और साफ्टवेयर की मदद से उनका काम काफी आसान हो गया है इससे श्रम बल, समय और धन की बचत भी हो रहा है।

अंतरिक्ष अनुसंधान- इसरो, नासा, स्पेस एक्स, टेसला जैसी कंपनियां आए दिन अंतरिक्ष में अपने रॉकेट और मशीन भेजती है ताकि अंतरिक्ष के बारे में नए-नए शोद्य किया जा सके। इस कार्य में, सबसे ज्यादा आटोमेटिक कृत्रिम बुद्धिमता आधारित मशीनों की मदद ली जाती है जो खुद ब खुद स्पेस में जाकर नए-नए खोज करती है।

हमारी रोज की जिंदगी में भी कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग बढ़ गया है। मार्केट में स्मार्ट टीवी, LED, AC, Car, Alexa आदि google में भी कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग होता है और भविष्य में इनका उपयोग और ज्यादा बढ़ने वाला है। अत: धीरे-धीरे मशीन और कृत्रिम बुद्धिमता हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बनते जा रहा है।

अत: जिस तरह से कृत्रिम बुद्धिमता का इस्तेमाल हर एक क्षेत्र में किया जा रहा है उसे देखकर यहीं लग रहा है कि भविष्य में अधिक से अधिक कार्य कृत्रिम बुद्धिमता पर आधारित मशीनों के द्वारा किया जाएगा। धीरे-धीरे पूरी मानव सभ्यता भी अपनी कार्य के लिए मशीनों पर ही निर्भर हो रही है और समय के साथ-साथ यह निर्भरता बढ़ती जायेगी। जैसे-जैसे तकनीकी का विकास होगा वैसे-वैसे ही मशीनों की कार्यक्षमता में वृद्धि होगा और आज जिन भी कृत्रिम बुद्धिमता मशीनों को भी कार्य करने के लिए हम आदेश देते है, उसकी भी जरूरत नहीं पड़ेगा वे खुद ही सारा काम कर लिया करेगी।

अत: कृत्रिम बुद्धिमता आनेवाले वर्षो में प्रौद्योगिकी की उपयोग को प्रभावित करनेवाली सबसे बड़ी चीजों में एक है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं हैं कि उसकी चुनौतियां नहीं है इसकी अनेक चुनौतियाँ है जैसे-

1. कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा अगर सारा काम होने लगेगा तो इंसानी शरीर और दिमाग दोनो की जरूरत कम होने लगेगा। इससे बेरोजगारी, सतत् विकास के लक्ष्य प्राप्त करने में समस्या उत्पन्न होगी।

2. ऊर्जा संकट की समस्या उत्पन्न होगा। अभी हाल ही में एक अध्ययन के अनुसार डेटा केंद्रों द्वारा उपयोग की जानेवाली कुल ऊर्जा का लगभग 40% तकनीकी उपकरणों को ठंडा करने में किया जाता है अब कंपनियां अपने डेटा केंद्रों की ऊर्जा की खपत कम करने के लिए साइबेरिया जैसे ठंडे मौसम में स्थानांतरित कर रही है।

3. निजता एवं सुरक्षा संबंधित समस्या।

इसके अलावा नैतिकता संबंधित आदि पर्यावरणीय समस्या, मानव स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, प्रौद्योगिकी की लत आदि।

हाल ही में ''मेगन'' नामक फिल्म के माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमता के नकारात्मक प्रभाव के बारे में समझ सकते हैं जैसे कि हम सभी जानते है कि ''विज्ञान ने जितना विकास किया है, उतना ही विनाश भी किया है'' इसलिए इस बात में कोई शक नहीं है कि कृत्रिम बुद्धिमता आने वाले समय में खतरनाक साबित हो सकता है, हालांकि यह भी एक मनुष्य की बनायी हुई खोज है इसलिए इसका कोई न कोई समाधान जरूर निकाल लिया जाएगा। उसके लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कदम उठाया जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कृत्रिम बुद्धिमता के चुनौतियों के समाधान के लिए ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजस, AI की नैतिकता पर यूनेस्को की सिफारिश, फिनलैण्ड की AI रणनीति को पूरे विश्व में लागू करने की सिफारिश किया जा रहा है।

भारत सरकार द्वारा भी कम चुनौति के समाधान के लिए नीति उपयोग द्वारा AIRWAT नामक क्लाउड कम्प्यूटिंग प्लेटफार्म स्थापित किया गया है इसके अलावा AI FOR ALL, AI पर राष्ट्रीय रणनीति नेशनल टास्क फोर्स, उत्कृष्टता केंद्र, राष्ट्रीय AI पोर्टल आदि प्रयास किया गया है।

अत: स्पष्ट है कि ''अति सर्वत्र वर्जयेत्'' अर्थात् अति करने से हमेशा बचना चाहिए अति का परिणाम हमेशा हानिकारक होता है यह बात कृत्रिम बुद्धिमता पर भी लागू होती है। अगर कृत्रिम बुद्धिमता पर बेवजह निर्भरता बढ़ती गई तो यह मानवता के लिए बहुत खतरा बन सकता है। हालांकि यह निश्चित है कि भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमता हमारा जरूरी साथी बन जाएगा जो बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल में मदद करेगा, बीमारी का पता लगाएगा, दवाइयों के निर्माण में वैज्ञानिकों की सहायता करना, शिक्षा और परामर्श देगा मगर मानवहित प्रभावित भी हो सकता है इसलिए एलेन मास्क का टिप्पणी है कि

''आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से उथल-पुथल तेजी से बढ़ सकती है और डरावनी और यहाँ तक कि विनाशकारी भी हो सकती है अत: इसलिए हम सभी को AI तकनीकी के बजाए हम सभी को अपनी इंटेलिजेंसी बढ़ाना चाहिए।''

❑❑❑

2. ''जल है तो कल है''

जल आनन्द का स्रोत है, ऊर्जा का भण्डार है, कल्याणकारी है, पवित्र करने वाला है और माँ की तरह पोषक तथा जीवन दाता है। अर्थात् जल है तो वर्तमान है कल है, इसके बिना जीवन की संकल्पना संभव नहीं है। इस धरती पर समस्त जीवन चक्र को बनाए रखने के लिए हवा, पानी, भोजन बहुत जरूरी है। जिसमें से ''जल'' प्रकृति का अनमोल धरोहर है। किंतु जिस प्रकार जल का अनियंत्रित दोहन होता जा रहा है; उससे कल की चिंता स्वाभाविक है। इसलिए जल का सतत् उपयोग, संरक्षण आवश्यक हो गया है।

प्राचीन काल में देखें तो मानव सभ्यता का विकास भी जल स्रोत के किनारे पर ही हुआ है चाहे वह हड़प्पा सभ्यता हो, मेसोपोटामिया या फिर मिस्र की सभ्यता। इसलिए सभ्यता का अस्तित्व भी जल के स्रोत पर टिका है। प्रारंभ से ही जल संरक्षण को लेकर विभिन्न काल-खण्डों में बड़े-बड़े, जलाशयों, नहरों, झीलों का निर्माण इसकी महत्ता को ध्यान में रखकर किया जाता रहा है जैसे सिंधु सभ्यता में मोहनजोदड़ों का विशाल स्नानागार, मौर्यकल में सुदर्शन झील का निर्माण मध्य काल में फिरोजशाह तुगलक द्वारा नहरों एवं झीलों का निर्माण आदि।

वर्तमान समय में भी देखें तो अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण को फिर से बढ़ावा दिया जा रहा है।

प्रश्न यह उठता है कि अगर वर्तमान समय में जल का संरक्षण नहीं किया गया तो क्या होगा? इसके बारे में विचार करने पर हमें उन विभिन्न रिपोर्ट का आकलन के परिणाम नजर आते हैं जो बहुत ही विनाशकारी है। जल मानव में प्रत्येक कार्य के लिए चाहे उसकी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय कोई भी क्रियाकलाप जल के बिना संभव नहीं है।

वर्तमान में देखें तो वैश्विक स्तर पर विश्व का तीन चौथाई भाग जल से घिरा है, किंतु पीने के स्वच्छ जल की उपलब्धता मात्र 3% के लगभग है, उसमें से भी अधिकांश स्वच्छ जल हिम-बर्फ की चादरों से ढ़ँका है। बढ़ती जनसंख्या के कारण जल-मांग पर दबाव दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है।

एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार विश्व में जल संसाधनों की सीमित उपलब्धता के और जनसंख्या की बढ़ती दवाब के कारण प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता घट रही है। दुनिया के प्रत्येक 60 लोगों में से केवल 13 लोगों के पास शुद्ध जल पहुँच पा रही है।

1951 में मीठे पानी की प्रति व्यक्ति वार्षिक उपलब्धता 3177 मी^{3} थी, जो 2011 में घटकर 1545 मी.^{3} रह गई। अनुमान के मुताबिक वर्ष 2025 में घटकर 1293 मी.^{3} रह जाएगी, वही 2050 में यह घटकर 1140 मी.^{3} तक आ सकती है। जो एक चिंता का विषय है क्योंकि इससे न केवल मानव जीवन प्रभावित होगा, बल्कि पशु-पक्षी, पेड़-पौधों के साथ हमारा पर्यावरण नष्ट होने लगेगा।

इसके साथ ही अन्य प्रकार की भी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती है जैसे नदी-जल विवाद में वृद्धि, जल-तनाव की स्थिति, उद्योग, कृषि एवं शहरीकरण पर नकारात्मक प्रभाव, सतत् विकास लक्ष्य- 6 की प्राप्ति में अवरोध प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता में गिरावट जल आभाव के कारण साफ-सफाई से समझौता करने पर मजबूर होना आदि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए हमारे कल के लिए जल का होना आवश्यक है।

किसी विचारक ने ठीक ही कहा है- ''हमारे दादा जी ने जिसे नदी में देखा, पिताजी जी ने कुएँ में, हमने जिसे नल में देखा और बच्चे ने बोतल में, पर अब इनके बच्चे नहीं देखेंगे।'' इसलिए वैश्विक स्तर पर नए पीढ़ी की खातिर पानी का संरक्षण करना आवश्यक है।

जल संरक्षण के लिए सर्वप्रथम हमें जल संकट के क्या कारण है इसके बारे में जानना आवश्यक है। अत: जल संकट के अनेक जिम्मेदार कारक है जैसे- जल का कुप्रबंधन, जल प्रदूषण, भूमिगत जल दोहन, दोषपूर्ण सिवेज तंत्र, जल गहन फसल, उद्योगों की भवास्थिति दोषपूर्ण, मानसून वर्षा का विषमता, दोषपूर्ण जल निर्यात नीति, जागरूकता का आभाव आदि।

इस संकट से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर अनेक कदम उठाए गए है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के तहत संयुक्त राष्ट्रसंघ ने जल को विकास की पोषणीयता का मानक माना गया है। इसलिए 22 मार्च को जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए जल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इसके अलावा सतत् विकास लक्ष्य-6 को हासिल करने के लिए समय-समय पर विचार विमर्श का आयोजन किया जाता है।

राष्ट्रीय स्तर पर भारत द्वारा जल संरक्षण के लिए कानूनी, नीतिगत और योजनाओं के माध्यम से जल संरक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है, जैसे जल संरक्षण अधिनियम- 1974, जल सूचना केंद्र, अटल भू-जल योजना जलाशय निगरानी तटीय सूचना प्रबंधन प्रणाली, नदी बेसिन प्रबंधन, राष्ट्रीय जलभ्रत प्रबंधन कार्यक्रम, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, वर्षा जल संरक्षण के लिए कैच-द-रन अभियान चलाया गया है।

इसके अलावा भारत सरकार द्वारा 2024 तक सभी के लिए सुरक्षित एवं किफायती पीने का पानी सार्वभौमिक एवं समान सुविधा उपलब्ध कराने के लिए जल जीवन मिशन की शुरूआत की गई है।

राज्य स्तर पर विभिन्न राज्य सरकार द्वारा जल संरक्षण के लिए अनेक कदम उठाए जा रह है, जैसे बिहार सरकार द्वारा सात निश्चय-I

एवं II जल जीवन हरियाली, मिशन, गंगा जल आपूर्ति योजना, इसके अलावा 'बिहार सरकार द्वारा वर्षा जल को संरक्षित करने के लिए बड़े-बड़े तालाबों का निर्माण किया जा रहा है।

अत: जल का संरक्षण सिर्फ सरकार और गैर सरकारी संस्थानों के प्रयास से संभव नहीं हो सकता है, इसके लिए देश के प्रत्येक नागरिक को अपने स्तर पर जल-संरक्षण करना चाहिए तभी आने वाले कल को बेहतर बनाया जा सकता है।

अत: ''जल है तो जीवन है जीवन है तो पर्यावरण है, पर्यावरण से ये धरती है और इस धरती से हम सब है'' अर्थात् जल से ही पर्यावरणीय जैविक-अजैविक घटक आपस में जुड़े हुए है। एक के प्रभावित होने से इसके अन्य संघटक पर प्रभाव पड़ते हैं। जैसे जल संकट के कारण मानव का विकास अवरूद्ध हो जाता है।

महिलाओं द्वारा जल को एक जगह से संग्रहित करने में अधिकांश समय व्यतित करना पड़ता है। खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव एवं उत्पादकता प्रभावित होती है। जल प्रदूषण से अनेक तरह की स्वास्थ्य संबंधी विकास उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे कुशल मानव संसाधन का निर्माण अवरूद्ध होता है।

अनेकों जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, जल संकट के कारण विलुप्त होते जा रहे है। इसलिए आवश्यक है कि हम सभी मिलकर इस अमूल्य संसाधनों का दक्षतापूर्ण उपयोग करे साथ ही साथ विभिन्न परम्परागत पद्धति द्वारा स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण को बढ़ावा दिया जाए। तभी वर्तमान के साथ-साथ कल पर पड़ने वाले दबाव को कम किया जा सकता है।

जिस प्रकार एक छोटी बूंद सतत् रूप से पत्थर पर पड़ने से उसमें छेद कर सकती है उसी प्रकार हमें छोटे-छोटे प्रयासों से हम अपने बड़े लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। आवश्यकता है तो सिर्फ उस छोटे प्रयास की।

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

3. ''बिहार में पर्यटन एवं संभावनाएं''

''विभिन्न भाषा और संस्कृति को देखते है।

पर्यटन से आप बहुत कुछ सीखते है।''

उक्त पंक्तियाँ पर्यटन के महत्व को दर्शाती है। पर्यटन व केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि यह मानव को पूर्णता भी प्रदान करती है। इसके साथ ही यह आय और रोजगार के साधन उपलब्ध कराती और विभिन्न क्षेत्रों, राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सहयोग, समन्वय और शांति को बढ़ावा देती है।

भले ही आज आभाषी-युग की शुरूआत हो चुकी है, किन्तु पर्यटन अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है क्योंकि पर्यटन में जिस प्रकार के जुड़ाव की अनुभूति होती है वह अन्य माध्यमों से संभव नहीं है। पर्यटन के माध्यम से ही किसी भी देश की प्राकृतिक उपहार, सभ्यता-सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों, भाषा, त्योहारों परम्पराओं को जानते है और सीखते है।

''पर्यटन पर्यटकों और अन्य आगंतुकों को आकर्षित करने और उनकी मेजबानी करने की प्रक्रिया में पर्यटक व्यापार, आपूर्तिकर्ता, मेजबान सरकारों और मेजबार समुदायों के मध्य होने वाले पारस्परिक व्यवहार से उत्पन्न होने वाले संबंधों और परिवारों का योग पर्यटन है।''

पर्यटन की परम्परा नवीन नहीं है, प्राचीन काल से ही यात्री विभिन्न देशों में जाकर वहाँ के सामाजिक-सांस्कृतिक स्वास्थ्य, को जानने-समझने का प्रयास करते रहे है। प्रारंभ में देखा जाए तो मेगास्थनीज, एरियन जिन्होंने उस समय अशोक के महल की तारीफ की थी। वहीं दूसरी तरफ ह्वेनसांग, फाहियान जैसे यात्री भी आए और यहाँ बौद्ध शिक्षा, ग्रहण की, साथ ही यहाँ के सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूप से विश्व को अवगत कराया। इसके बाद अनेक अरबी एवं अंग्रेजी यात्री आए।

वर्तमान समय में देखें तो पर्यटन वैश्विक अर्थव्यवस्था में निर्णायक भूमिका अदा कर रहा है। यहाँ तक यह अनेक छोटे-बड़े शब्दों की अर्थव्यवस्था और आय का महत्वपूर्ण आधार है। वैश्विक स्तर पर पर्यटन प्रति वर्ष 2 ट्रिलियन डॉलर का योगदान करता है और आने वाले वर्षों में इसमें विस्तार होने की संभावनाएं है।

भारत के प्रत्येक राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेश पर्यटन के लिहाज से भी प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विविधताओं से भरा है। बिहार उनमें से एक है, जो राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

बिहार में पर्यटन एक उभरता हुआ क्षेत्र है, वर्तमान समय में देखें तो राज्य की सकल घरेलू उत्पाद में 1% का योगदान करती है। साथ ही 4 मिलियन लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आय एवं रोजगार के साधन उपलब्ध कराती है।

कोरोना महामारी के संकट से उबड़ने के पश्चात् वर्ष 2021 में 25 लाख स्वदेशी पर्यटक एवं 1046 विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ है। राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन के क्षेत्र में बिहार का योगदान 0.5% के लगभग है। जो कि न्यूनतम योगदान को प्रदर्शित करता है।

फिर भी बिहार में पर्यटन क्षेत्र की असीम संभावनाएँ है, जिसे हम निम्न संदर्भों में देख सकते है जैसे ऐतिहासिक-सांस्कृति पर्यटन, पर्यावरणीय पर्यटन, वन्य जीव पर्यटन, मनोरंजन पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन आदि।

अब हम विस्तार से चर्चा करेंगे कि बिहार में पर्यटन की संभावनाएँ किन-किन क्षेत्रों में निहित है, सरकार इसके लिए कौन-कौन से कदम उठा रही है।

ऐतिहासिक पर्यटन :- ऐतिहासिक पर्यटन से तात्पर्य पर्यटक यह जानने में रूची रखते है कि हमारे पूर्वज जिस प्रकार जीवन-यापन करते थे, किस प्रकार की सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था विद्यमान जैसे- विभिन्न स्थलों, मंदिरों, किलो, चर्चों आदि की यात्रा करते है।

बिहार में देखा जाए तो इनकी ऐतिहासिक परम्परा गौरवशाली रही है, और निम्न पर्यटन गणतव्य अनेक जगह विद्यमान है, जैसे सीता-राम की कर्म-कांड, गया का बौद्ध मंदिर, गुरपा हिल्स, रामपुरवा-अरेराज का अशोक स्तंभ, सिख गुरू हरमिंदर साहिब, शेर-शाह का मकबरा, सासाराम, मखदूम-साह मनेर शरीफ, आदि।

बिहार सरकार ने केंद्र सरकार के सहयोग के साथ-साथ अनेक प्रयास किए है, जिससे ऐतिहासिक- सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके। इसके लिए केंद्र सरकार ने विभिन्न धार्मिक सर्किट की स्थापना भी की है, साथ ही बिहार सरकार ने भी बुद्ध सर्किट, जैन सर्किट, राम सर्किट, सूफी सर्किट आदि जो तैयार कर रही है। इसके अलावा स्वदेश दर्शन योजना, प्रसाद योजना के माध्यम से विभिन्न सांस्कृतिक-ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षण प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है।

पर्यावरणीय पर्यटन

पर्यावरणीय पर्यटन के तहत पर्यटक ऐसे सुदूरवर्ती स्थानों की यात्रा को अधिक प्राथमिकता देता है, जहाँ उन्हें प्रकृति में शांत वातावरण, स्वच्छ वायु, गर्म अथवा ठंडी जलप्रपात में ठहरने और चैन की सांस ले सके।

इस प्रकार देखा जाए तो बिहार में इस तरह के पर्यटन स्थल की प्रधानता है, बिहार को ऐसे क्षेत्र वरदान के रूप में प्राप्त हुए है'' क्योंकि यह स्थल अपने अंदर प्राकृति की सुंदरता को समेटे हुए है। जैसे- कैमूर

हिल, गुरपा हिल्स, ककोलत जल प्रपात, राजगीर गर्म अथवा ठंडा जल कुंड, सोमेश्वर की पहाड़ी-''दून'', वाल्मीकि नेशनल पार्क, भवानी वाटर फॉल, आदि।

इसके अलावा भी सरकार अनेक योजनाओं के माध्यम से पर्यटन को बढ़ावा दे रही है जैसे राजगीर ग्लास ब्रिज, कोशी वाटर सफारी, इको सर्किट आदि का निर्माण कर रही है।

वन्य जीव पर्यटन :–

इसके तहत पर्यटक विभिन्न प्राणी जगत-वनस्पति जगत को देखना पसंद करते है। जिससे पृथ्वी पर निर्भर विभिन्न विविधताओं और आवासों को जाना जा सके आदि।

वन्य जीव पर्यटन के लिहाज से भी बिहार समृद्ध है। क्योंकि अनेक जीव-जन्तु पाए जाते है जैसे- बाघ, निल गाय, हिरण-डॉलफीन, मगरमच्छ, पटना चिड़िया-घर आदि।

सरकार ने इसको बढ़ावा देने के लिए वाल्मीकि टाइगर रिज़र्व को भी स्थापित किया है, भागलपुर डॉलफिन अभ्यारण, कुशेश्वर पक्षी विहार, पंत वन्यजीव अभ्यारण, जमुई में पक्षी महोत्सव का आयोजन आदि।

मनोरंजन पर्यटन :–

इसके तहत पर्यटक मनोरंजन गतिविधियों के उद्देश्य से पर्यटन करते है। अधिकांश पर्यटन माहौल परिवर्तन के लिए किया जाता है। इसलिए वर्तमान समय में वैकेंट दूर अधिक लोकप्रिय हो गए है।

इस आधार पर देखा जाए तो बिहार में मनोरंजन पर्यटन की आसीम संभावनाएं है, क्योंकि बिहार में महत्वपूर्ण त्योहार-मेले का आनन्द लेने के लिए स्वदेश एवं विदेशों से पर्यटकों का आगमन होता है। जैसे सौराष्ट्र मेला, सोनपुर मेला, छठ-पर्व आदि विश्व प्रसिद्ध है।

इसके अलावा भी बिहार में स्वास्थ्य पर्यटन एवं ग्रामीण पर्यटन की असीम संभावनाएं है। जिसे अधिक लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

बिहार सरकार ने बिहार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ''ब्यूटिफल बिहार'' लोगों/प्रतीक का अनावरण किया है, जिसके तहत बिहार की विविधता के बारे में जानकारी प्रदान की जा सके। इसके अलावा केन्द्र सरकार ने अपने धरोहर को जानो कार्यक्रम, इनक्रेडिबल इंडिया आदि के माध्यम से पर्यटन को बढ़ावा देकर वसुधैव कुटुम्बकम की संकल्पना को साकार करने का प्रयास कर रही है।

इन प्रयासों के बावजूद पर्यटन को लेकर कई तरह की अनिश्चितता और चुनौती विद्यमान है। जैसे- पर्याप्त अवसंरचना का आभाव है। जैसे पर्यटन स्थल पर न तो आवास और न ही शौच की, न जल व्यवस्था होती है। साथ ही पर्यटन स्थल तक पहुँचने वाले मार्ग की भी स्थिति चिंताजनक है।

अन्य चुनौतियों पर नजर डाले तो सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौतियाँ है, जो पर्यटन के लिए तो नुकशानदेह तो है ही साथ ही आस-पास क्षेत्र में भी संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

ज्यादातर पर्यटनों के साथ क्षेत्रीयता अथवा राष्ट्रीयता अथवा अन्य किन्हीं कारणों से हिंसा का सामना करना पड़ता है। जो शासन व्यवस्था पर सवाल खड़े करता है।

इसके अलावा पर्याप्त संसाधन का अभाव है, न ही कुशल गाइड उपलब्ध है, न ही पर्याप्त स्वास्थ्य उपचार केन्द्र है।

इसलिए सरकार को चाहिए कि शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए अन्तरमंत्रालय विभागों में समन्वय को बढ़ावा दिया जाता, सतत् विकास लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सतत् पर्यटन को भी बढ़ावा देने के लिए स्थानीय समुदायों, संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

प्रशिक्षित गाइड, लैंगिक समानता के तहत महिला को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। उत्तम पर्यटक आवास एवं धरोहर को पी०पी०पी० मॉडल के आधार पर लागू करने की आवश्यकता है और केन्द्र सरकार की पहल धरोहर गोद ले योजना जो राज्य में भी अपनाया जाना चाहिए।

तभी जाकर बिहार एक बेहतर पर्यटक गणतव्य के रूप में स्थापित हो सकेगा।

❑❑❑

4. ''बिहार में कला और संस्कृति''

''सदा से मानव ऐसा नहीं रहा है, जैसा वो आज है। कोई युग ऐसा न था जिसमें पेड़ों पर रोटियाँ फलती हो और आदमी तोड़कर खा लेता हो। बल्कि एक दिन था, जब उन सारी चीजों का, जो आज हमारे चारों ओर दिखती है अथवा महसूस होती है, उसका अभाव था। कई युग लगे हैं इसे बनने में, मानव अपनी आवश्यकता, सुझ-बुझ और मेहनत से इसका विकास किया है। जंगली जीवन से मानवीय जीवन की ओर बढ़ते हुए सामाजिक जीवन का विस्तार किया गया है और आगे भी करता रहेगा। इन्हीं के सम्मिलित विचारों को संस्कृति कहते है और इसके भौतिक स्वरूप को सभ्यता एवं इसके अभिव्यक्ति का माध्यम विभिन्न कलाओं को मानते हैं।''

उपरोक्त कहानी मानव की उस यात्रा को बयाँ करती है, जिसे मानव ने अर्जित किया है, और अपने आने वाले पीढ़ी के लिए संजोकर हस्तानांतरित कर दिया है। क्या हमने अपनी संस्कृति एवं कला को जाना है, उसका संरक्षण आने वाले पीढ़ी के लिए कर रहे हैं? क्या होगा अगर मानव जीवन से कला एवं संस्कृति का अस्तित्व न रहें। हमें उसे संरक्षण प्रदान करने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए कौन-कौन से सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। इस लेख में हम उसकी चर्चा बिहार राज्य के संदर्भ में करेंगे।

प्रारंभ करने से पहले कला और संस्कृति के मूल अर्थ को जानना आवश्यक है।

संस्कृति लोगों के सामाजिक जीवन का प्राण है। संस्कृति विचारों, मूल्यों एवं आदर्शों की दुनियाँ है। जिसका प्रयोग मानव अपने सामाजिक जीवन को संचालित करने के लिए करता है। इसके तहत विभिन्न धार्मिक विश्वास व्यवहार, आश्रम व्यवस्था, परिवार, शादी, वस्त्र, खान-पान, पर्व त्योहार आदि के स्वरूप को सम्मिलित किया जाता है।

कला, ऐसी पूर्ण चित्र, पेंटिंग, पांडुलिपियाँ, स्मारक, मूर्तियों, गीत आदि को संदर्भित करता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, रचनाओं एवं कल्पनाशीलताओं को अभिव्यक्त करता है। इसके माध्यम से हमें अपने अतीत के साथ-साथ भविष्य से जुड़ने का अवसर प्राप्त होता है और हमारे अन्दर सृजनात्मक क्षमता का विकास होने लगता है।

विश्व में अनेकों संस्कृति एवं कला के स्वरूप देखने को मिलते हैं। जैसे पाश्चात्य संस्कृति, इस्लामी संस्कृति, जनजातीय संस्कृति आदि। भारत भी अपने कला और संस्कृति के क्षेत्र में प्राचीन काल से समृद्ध रहा है, यहाँ अनेक प्रभार भी संस्कृति एवं कला के विभिन्न स्वरूपों से भरा हुआ है। इन्हीं क्षेत्रों में से एक बिहार की कला संस्कृति है, जिसके बारे में हम विस्तार से चर्चा करने जा रहे हैं।

बिहार की कला एवं संस्कृति की गौरवशाली परम्परा रही है। यहाँ कला एवं संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों एवं उसके माध्य समायोजन देखने को मिलता है। बिहार की कला संस्कृति का विकास उत्तर पाषाण काल से प्रारंभ होता हुआ मालूम पड़ता है, किन्तु आर्यों के आगमन के पश्चात् इसके स्वरूप में स्थायित्व एवं व्यापकता आई। किन्तु बाद के वर्षों में इस क्षेत्र में अनेक नवीन कला एवं संस्कृति, समूहों का आगमन हुआ जैसे- यूरोपियन कला और संस्कृति, इस्लामिक कला एवं संस्कृति जिसने बिहार की कला और संस्कृति में तड़का लगाने का कार्य किया।

बिहार की संस्कृति की बात की जाए तो यह भोजपुरी, मैथिली, मगही, तिरहूत तथा अंग सांस्कृतियों का मिश्रण है। जहाँ समाज पुरूष प्रधान है, और यहाँ के बच्चे अपने माता-पिता के 'श्रवणकुमार'' है। यहाँ विभिन्न जाति, समुदाय भाषा के लोग एक साथ रहते हैं, जैसे हिन्दु, मुस्लिम, इसाई, जैन, सिख, बौद्ध एवं जनजातियाँ आदि। यहाँ की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है।

हिन्दु और मुस्लिम यद्यपि आपसी सहिष्णुता का परिचय देते है, दोनों समुदायों में विवाह को छोड़कर सामाजिक एवं पारिवारिक मूल्य लगभग समान है। जैन एवं बौद्ध धर्मों की जन्मस्थली होने के बावजूद यहाँ दोनों धर्मों के अनुयाइयों की संख्या कम है। पटना सहित अन्य शहरों में सिख धर्मावलंबी अच्छी संख्या में है।

बिहार की कला परम्परा की बात की जाए तो यहाँ की स्थापत्य, चित्रकला, संगीत, नाट्य भाषा- साहित्य अपने आप में महत्वपूर्ण है। प्राचीन काल में मौर्य साम्राज्य के दौरान अनेक भवन, स्तंभ, स्तूप, बिहार का निर्माण किया गया, जिसमें पटना में स्थित राजमहल, बराबर और नागार्जुन की गुफा, अशोक काल में निर्मित रामपूर्वा, वैशाली अरेराज की स्तंभ महत्वपूर्ण है, जिस पर चमकती हुई पॉलिश, उस समय की सर्वोत्तम कृति मानी जाती है। जिसकी चर्चा, एरियन, ह्वेनसांग जैसे यात्रियों ने अपने यात्रा वृत्तांत में किया है।

दूसरी तरफ गुप्त काल से नालंदा विश्वविद्यालय पाल काल के दौरान अनेक, भवन निर्मित किए गए जैसे विक्रमशीला विश्वविद्यालय, ओदंतीपूरा विश्वविद्यालय आदि जहाँ पाली भाषा में शिक्षा का प्रदान की जाती थी। मध्यकाल में विदेशीयों के आगमन के पश्चात् कला के नए स्वरूपों का आगमन हुआ इसके तहत शेरशाह सूरी ने सासाराम में अपने मकबरे का निर्माण करवाया जो इस्लामी पद्धति पर आधारित था। उसके बाद अंग्रेजों का आगमन हुआ जिसने चर्च, सचिवालय गोलघर आदि का निर्माण करवाया। इसके अलावा बिहारशरीफ में मखदूम शाह का मकबरा भी अपने इस्लामिक स्थापत्य और भारतीय स्थापत्य का सम्मिश्रण है।

बिहार की चित्रकला की बात की जाए तो यहाँ भी पटना चित्रकला, मिथिला पेंटिंग एवं मंजुषा चित्रकला आदि महत्वपूर्ण है।

पटना चित्रकला को कंपनी चित्रकला के नाम से जाना जाता है, इसमें प्रचलित लोक-समाज की भौतिक जीवन से संबंधित एवं प्राकृतिक का चित्रण पशुपक्षियों आदि का चित्रण किया जाता रहा है। जिससे उस समय की सामाजिक-सांस्कृतिक स्वरूप को समझने में सहायता मिलती है।

इसी प्रकार यहाँ भी नाट्य संगीत एवं नृत्य कला महत्वपूर्ण है, भारतीय शास्त्रीय संगीत में बहुत बड़ा योगदान दिया है, जैसे उस्ताद बिस्मिल्लाह खान प्रसिद्ध ''शनै वदम'' है इसके अलावा द्रौपदी गायक मिश्रा और मलिक बिहार के कुछ महान संगीतकार है।

इसके अलावा शास्त्रीय संगीत में ताल, लय, माप्रा, राग-रागिनी आदि से सम्बद्ध जटिल नियमों का पालन किया जाता है। जो स्वरूपों में होते हैं। ''कंठ संगीत और वाद्य संगीत। ध्रुपद, धमार, खयाल और ठुमरी राज्य की सर्वाधिक प्रचलित शास्त्रीय संगीत है। स्थानीय गीतों में चैती, कजरी, जांतसारी आदि लोकप्रिय लोकगीत है। इसके अलावा मिथिला में विशेष तौर पर विद्यापति के गीत गाने की परंपरा है। इन गीतों को ''नचारी'' कहते है। इनका स्वरूप अर्द्धशास्त्रीय है जिसमें भगवान शिव की भी स्तुति की जाती है।

इसके अलावा मनोरंजन प्रसाद सिन्हा द्वारा रचित ''फिरंगिया'' गीत इतना लोकप्रिय हुआ कि इस गीत को गानेवालों को तुरंत नैढकर लिया जाता था। आल्हा, पिरहा, लोरिणायन गाने की पुरानी परम्परा रही है। श्री रघुवीर नारायण का देश प्रेम से ''बटोहिया'' गीत भोजपुरी क्षेत्र के घर-घर में गाया।

विभिन्न नाट्य कला के माध्यम से लोग अपने विचारों को अभिव्यक्त करते थे जैसे विदेशिया, जट-जटिन, डोमकच, यार-बहनो का त्योहार समा-चकेवा जो मिथिला क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध है। इसके अलावा अनेक लोकनृत्य भी है जैसे कठफोड़वा नृत्य, लौंडा नाच, धोबिया नृत्य, झरनी नृत्य आदि।

बिहार में अनेक पर्व त्योहारों एवं मेलों का आयोजन किया जाता है जो सांस्कृतिक परम्परा का अभिन्न अंग है जैसे- छठपर्व, महाशिवा रात्री, रामनवमी आदि। इसके अलावा अनेक मेले का आयोजन भी किया जाता है जैसे सोनपुर मेला, पितृपक्ष मेला, मंदार मेला, सौराष्ट्र मेला आदि।

बिहार की भाषा, साहित्य दर्शन प्राचीन काल से ही विशिष्ट स्थान रखता है जिसमें आर्यभट्ट, मंडन मिश्र, वाचस्पति मिश्र से लेकर साहित्य के क्षेत्र में विद्यापति, फणीन्द्रनाथ घोष, रामधारी सिंह दिनकर, गुलाम हुसैन, तबातबाई आदि है। इसके अलावा प्राचीन काल में याज्ञवल्क्य जैसे प्रधान दार्शनिक, चाणक्य का अर्थशास्त्र उर्दू-भाषा के प्रख्यात कवि आदि बिहार को सुशोभित करते है। यहाँ पर अनेक प्रकार की बोली-भाषा के रूप में प्रचलित है जैसे मैथिली, बाजीवा, भोजपुरी, मगही आदि की प्रधानता है।

बिहार की कला-संस्कृति के तहत देखे तो यहाँ की पहनावा भी कई राज्यों के परम्परा के अनुठी है। परम्परागत रूप से यहाँ पुरूष धोती-कुर्ता पहनते है। महिलाएँ सलवार-समीज पहनती है, किन्तु इसके साथ ही महिलाओं के लिए अद्वितीय और व्यक्तिगत पोषाक शैलियों में ''तुषार सिल्क साड़ी'' है जिसे महिलाएँ ''सिधे आँचल'' से पहनती है।

बिहार के व्यंजन यहाँ की आर्थिक गतिविधिों के अनुरूप है, यहाँ की आबादी ज्यादातर कृषि कार्यों से जुड़ी है। जहाँ हर व्यक्ति के लिए पर्याप्त अवसर और कार्य करने के लिए अनेक व्यवसाय उपलब्ध है। बिहार कला और सांस्कृतिक परम्परा में तीन प्रभार के व्यंजन देखने को मिलते है। मिथिला, भोजपुरी, मगही व्यंजन आदि मिथिला के लोग में मछली काफी प्रचलित है। वहीं भोजपुर में लोग मांस खाना पसंद करते है। जैसे- चम्पारण मिट के लिए चर्चित स्थान है। मगही पान की प्रधान तो बिहार के अलावा भारत में भी है।

इसके अलावा कुछ अन्य व्यंजनों में सबसे प्रसिद्ध लिट्टी-चोखा है, इसके अलावा फलों के रस से निर्मित पेय पदार्थ, मखाना, सीतामढ़ी का बालुशाही, नालंदा का सिलाव खाजा आदि प्रमुख है।

बिहार की कला और संस्कृति को समग्र रूप से देखें तो यहाँ लोगों में परम्परा, प्रतिष्ठामान, अतिथि सत्यकार कुछ ऐसे मूल्य है, जो उसे भावनात्मक लोगों के रूप अभिहित किया जाता है।

कोई भी समाज कला एवं संस्कृति के बिना जीवित नहीं रह सकता है, जिन्होंने भी अपनी सांस्कृतिक परम्परा को त्यागा उसका अस्तित्व ही मिट गया चाहे वह देश हो, (जैसे मिश्र, मेसोपोटामिया आदि) या वहाँ के लोग हो।

इसलिए कला एवं संस्कृति के महत्व को समझते हुए विभिन्न सरकारी द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय अथवा समूहों द्वारा इसके संरक्षण को लेकर प्रयास किये जा रहे है। जैसे- UNESCO की वैश्विक नेटवर्क सांस्कृतिक धरोहर, विश्व रचनात्मक शहर नेटवर्क आदि राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न त्योहारों मेले के आयोजन को सम्पन्न करवाया जाता है। साथ ही, स्थानीय स्तर पर लोगों द्वारा भी इसे संरक्षण के लिए प्रयास किए जाते है।

राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य अकादमी आवॉर्ड, ललित कला पुरस्कार, संगीत नाटक पुरस्कार, भिखारी ठाकुर पुरस्कार, बिस्मिलाह खां पुरस्कार, सीता देवी पुरस्कार, आदि के माध्यम से कला एवं संस्कृति का संरक्षण और बढ़ावा दिया जाता है।

इसलिए आवश्यक है कि हम सभी का यह दायित्व है कि संविधान में निहित कर्तव्य का पालन व्यक्तिगत एवं सामुहिक स्तर पर करते इन अमूल्य धरोहर का संरक्षित करने का प्रयास करें। नहीं तो गांधीजी के शब्दों में-

''कोई भी संस्कृति तभी तक जीवित रह सकती जब वहाँ के लोग अन्य से पृथक रहने का प्रयास नहीं करते''

इसलिए आवश्यकता है इस विविधता पूर्ण समाज में हम सभी लोग मिलकर अपने कला एवं सांस्कृतिक परम्परा को आने वाले पीढ़ियों के लिए संजोंकर इसको संरक्षित करने का प्रयास करें।

❑❑❑

5. ''बिहार में स्टार्ट-अप और चुनौतियाँ''

''खुला है आसमां, जरा पंखों को उड़ान तो भरने दें।
छूना है बुलंदी को जरा कोशिशों को अपनी अंजाम तो दे।''

उक्त पंक्तियाँ मानव के हौंसले एवं उसके विकास की कहानी को बयां करती है। मनुष्य ने अपने होमोशैपियन युग से लेकर वर्तमान तक अपने चुनौतियों की बाधा को पार करके अनेक क्रांतियों को प्रादुर्भावित किया। मानव के इतिहास पर दृष्टि डाले तो हमें ज्ञात होता है कि लगभग एक लाख वर्ष पूर्व मानव ने आग की खोज की, फिर 10 हजार वर्ष पूर्व पहिए, 2500 वर्ष पूर्व कृषि की और कृषि क्रांति से कृषि का विकास हुआ। 15वीं सदी में वाणिज्य क्रांति का प्रादुर्भाव हुआ। मानव के कदम विकास की ओर निरंतर बढ़ते रहे। 16-17 वीं सदी में भाप इंजन का विकास मशीनीकरण, रेल पटरी का विकास हुआ, जिसने प्रथम औद्योगिक क्रांति की नींव रखी और आज मानव विकास की इसी क्रम में चतुर्थ औद्योगिक क्रांति की ओर बढ़ चुका है।

क्या हम इस चतुर्थ औद्योगिक क्रांति के लिए तैयार है? क्या हमारा स्टार्ट-अप परितंत्र विद्यमान चुनौतियों की बाधा को पार कर इसका हिस्सा बनने में सक्षम है? इसी कड़ी में हम बिहार की स्टार्ट-अप परितंत्र की व्याख्या की व्याख्या करेंगे, जिसमें स्टार्ट-अप के स्वरूप, उसकी वर्तमान स्थिति, संभावनाएं और चुनौतियों को रेखांकित करते हुए, उसके निदान का उपाय ढुंढने का प्रयास करेंगे।

एक स्टार्ट-अप को ऐसे उत्पाद और सेवा के उत्पादक कंपनी के रूप में परिभाषित किया गया है जो भारत में 10 साल के अन्दर स्थापित हुई हो (10वर्ष पूर्व नहीं) जिसका वार्षिक कारोबार रु. 100 करोड़ से कम हो और कंपनी अधिनियम या साझेदारी कर्म या सीमित देयता अधिनियम के तहत पंजीकृत हो।

केन्द्र सरकार के उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट ''व्यापार सुधार कार्य योजना'' के तहत 2022 में बिहार को ''इमार्जिंग बिजनेस परितंत्र'' वर्ग में शामिल किया गया है। जो बिहार को एक उभरती हुई स्टार्ट-अप परितंत्र हब के रूप में परिलक्षित करता है।

आर्थिक समीक्षा- 2022-23 के तहत बिहार में औद्योगिक क्षेत्र का योगदान सकल राज्य मूल्यवर्धन में 2020-24 में 19.4% है जो पिछले वर्ष में 20.2% रहा है। बिहार की संवृद्धि 10.98% तक पहुँच गई है जो देश भर में चौथी सर्वाधिक संवृद्धि दर प्राप्त करने वाला राज्य है।

वर्तमान समय में बिहार के सफल औद्योगिक विकास के लिए कई नवीन अवसर उभरकर आये है। किसी उद्योग-परितंत्र को बढ़ावा देने के लिए जिन न्यूनतम संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है वो इस राज्य में उपलब्ध है- जैसे

सर्वाधिक गति से वृद्धि करने वाले राज्य के रूप शामिल है। दूसरी तरफ भौगोलिक स्थिति भी अनुकूल है जैसे- अंर्तजलीय नदीमार्ग, बंगाल तक पहुँच प्रदान करता है और समूही रास्ते से जोड़ता है। इसके अलावा जनांकिकीय लाभांश के मामले में भी बिहार एक युवा प्रदेश है जहाँ भी 65% श्रम बल मौजूद है।

उपभोक्ता राज्य एवं विस्तृत बाजार की उपलब्धता, जल संसाधन की प्रचुरता, समतल मैदान, अंतर्राज्यीय एवं बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था आदि है।

बिहार में स्टार्ट-अप परितंत्र के लिए अनेक क्षेत्र मौजूद है, जिन्हें मुख्यत: दो वर्गों में बिभाजित किया जाता है। प्रथम-कृषि आधारित उद्योग और दूसरा गैर-कृषि आधारित उद्योग।

कृषि आधारित उद्योग के तहत जूट उद्योग, गन्ना उद्योग, डेयरी उद्योग, इथेनॉल उत्पादन उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग आदि।

गैर कृषि आधारित उद्योगों में वस्त्र उद्योग, चमड़ा उद्योग, नवीकरणीय उर्जा क्षेत्र, हास्पिटलिटी, पर्यटन उद्योग, चिप-निर्माण केन्द्र, साफ्टवेयर उद्योग सूचना-प्रौद्योगिकी उद्योग, प्लास्टिक रबड़ उद्योग आदि।

बिहार में वर्तमान में आयी औद्योगिक सर्वेक्षण प्रतिवेदन के अनुसार 2019-20 में क्रियाशील उद्योगों की संख्या 3000 के करीब रही है। जो कि देश भर में इसका योगदान 0.2% के आसपास है।

बिहार सरकार ने बिहार में उद्यमिता एवं स्टार्ट-अप परितंत्र को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। क्योंकि इससे रोजगार सृजन की अपार संभावनाएँ, साथ ही इससे राज्य के राजस्व में वृद्धि होगी, संसाधनों का दोहन संभव हो सकेगा और देश की प्रगति को गति प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगी। जिसके फलस्वरूप बिहार एक बेहतर स्टार्ट-अप के रूप में विकसित होगा।

बिहार सरकार ने इसके लिए अनेक नीतियाँ, योजनाएँ एवं कार्यक्रम लागू किए है, जिसमें स्टार्ट-अप परितंत्र को बढ़ावा दिया जा सके जो इस प्रकार है-

बिहार औद्योगिक निवेश प्रोत्साहन नीति :- इसे वर्ष 2016 से लागू किया गया है, किन्तु 2022 में इसको और ज्यादा विस्तृत आधार प्रदान किया गया। इस नीति के तहत राज्य में 15% औद्योगिक विकास दर को प्राप्त करना है। साथ ही द्वितीयक क्षेत्र के योगदान को बढ़ाकर 25% करना है। वर्ष 2022 में इसका विस्तार कपड़ा और चमड़ा उद्योग तक विस्तृत कर दिया। इसके माध्यम से पूँजीगत अनुदान, रोजगार अनुदान, बिहली अनुदान, भाड़ा एवं पेंटेट अनुदान आदि सहित प्रोत्साहन की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है।

इसके तहत रु. 10 करोड़ का अनुदान, साथ ही 3000-5000 रुपए वेतन सहायता, 30% परिवहन सहायता 5 वर्ष तक माल ढुलाई (जो 10 लाभ तक होगी) प्रदान कि जाएगी।

बिहार स्टार्ट-अप नीति :- राज्य सरकार ने नई औद्योगिक इकाइयों को बढ़ावा देने और इसके विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने के लिए 2017 लागू की गई, साथ ही इसको आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2022 में इस नीति को संवर्धित कर व्यापक आधार प्रदान किया गया। इसकी समय सीमा 2022-27 तक के लिए लागू रहेंगी।

इसके अंतर्गत 500 करोड़ रु. की प्रारंभिक कोष के साथ एक न्यास की स्थापना की गई है, साथ इसको बढ़ावा देने के विशेष स्टार्ट-अप सहायता इकाई की स्थापना की गई है। 10 वर्षों के लिए 10 लाख रुपये तक का ऋण प्रदान किया जाएगा, उत्पादन विकास-परीक्षण के लिए रु. 3 लाख, साथ ही महिलायें अनुसूचित जाति एवं जनजाति को क्रमश: 10.5 और 11.5 लाख सीड फंड के रूप में सहायता प्रदान की जाएगी।

बिहार स्टार्ट-अप नीति की रूप रेखा चार स्तंभों पर तैयार की गई है जिसे "YUVA" कहा गया है। Y– हाँ– आरंभ जागरूकता नेटवर्किंग अभियान, U– Unleash (छोड़ना-विनियमण समर्थकों को छोड़ना, V– Vibrancy (परितंत्र सुकर करने हेतु) A– Access पहुँच (वित्त और उद्भव सहायता)।

बिहार कृषि निवेश प्रोत्साहन नीति के कृषि आधारित उद्योग को बढ़ावा देने एवं रोजगार सृजन के प्रयास किए जा रहे है। इसके तहत पात्र व्यक्तिगत निवेशकों, उद्यमियों या पंजीकृत किसान-आधारित कंपनी (PPO) को, कृषि प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना आधुनिकीकरण/विविधकरण/विस्तार के लिए पूँजीगत अनुदान प्रदान करती है।

न्यूनतम स्वीकृत पात्र, परियोजना के लिए रु. 25 लाख से 5 करोड़ तक का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। यह पूँजी सब्सिडी समर्थन पूरी तरह से क्रेडिट लिंक्ड होगा और बैंक/वित्तीय संस्थान से सार्वाधिक है। परियोजना लागत में 20% से कम नहीं होनी चाहिए।

इथेनाल उत्पादन प्रोत्साहन नीति- 2021- कृषि आधारित उद्योग-परितंत्र को बढ़ावा देने तथा जैव ईंधन तथा रोजगार सृजन और पर्यावरण संरक्षण के लिए बनायी गई है। इसके तहत राष्ट्रीय जैव ईंधन समन्वय समीति के द्वारा स्वीकृत सारे फीडस्टॉक से इथेनॉल उत्पादन की अनुमति प्रदान करना है।

इसके तहत पूँजीगत सब्सिडी की मात्रा संयंत्र और मशीनों के व्यय का 15% होगी जो अधिकतम 5 करोड़ होगी विशेष श्रेणी के निवेशकों के लिए पूँजीगत सब्सिडी की मात्रा 15.75% होगी जो अधिकतम 5. 25 करोड़ होगी।

इसके अलावा बिहार सरकार ने युवाओं में उद्यमिता को बढ़ावा देने, रोजगार सृजन के लिए युवा उद्यमी योजना, मु० महिला उद्यमी योजना, एससी/एसटी उद्यमी योजना, के माध्यम से ऋण प्रदान की जा रही है। केन्द्र सरकार के द्वारा भी अनेक योजनाएँ प्रारंभ की गई है जैसे स्टार्ट-अप योजना, स्टैंड-अप योजना, प्रधानमंत्री लघु-मध्यम उद्योग औपचारिकरण योजना, मेक इन इंडिया आदि। उपरोक्त प्रयासों से सरकार ने अनेक सफलताएँ प्राप्त कि है और आगे के लिए भी प्रयासरत है। परिवहन एवं संचार क्षेत्र में 2011-19 की अवधि में 10. 3% की वृद्धि दर्ज की है। केवल 2021-22 में इस क्षेत्र में सर्वाधिक 20.4% वृद्धि दर्ज की है। राष्ट्रीय उच्च पथ की लम्बाई 2022 तक 5940 किमी. पहुँच गई है। ''स्मार्ट'' शासन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न विभागों और कर्मचारियों-अधिकारियों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग के जरिए डिजिटल मंच उपलब्ध करवाया जा रहा है।

उर्जा क्षेत्र में देखें तो बिजली की प्रति व्यक्ति खपत 2017-18 में 280 किलोवाट से बढ़कर 2021-22 में 329 किलोवाट हो गई है। चार वर्षों में 17.5% वृद्धि भी है। कुल बिजली उपलब्धता 2021-22 में 6475 मेगावाट हो गई।

कौशल विकास के तहत अनेक योजनाओं के माध्यम से युवाओं को वंचित वर्गों में कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत कुशल मानव संसाधन के रूप में तैयार किया जा रहा है। कुशल युवा कार्यक्रम के तहत 16.79 (लाख) युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके है। 76 हजार युवक-युवतियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। पीएम कौशल विकास योजना के तहत 12 हजार प्रशिक्षण पुरा कर चुके है इसके लिए 114 केन्द्र स्थापित किए गए है।

अपने निवेश संबंधी सकारात्मक दृष्टिकोण के कारण राज्य रु. 30. 75 हजार करोड़ रुपए के संकल्पित निवेश वाली 164 इथेनॉल उत्पादक इकाइयों को आकर्षित करने में सफल रहा है। पश्चिमी चम्पारण, खाद्य-पार्क, पूर्णिया में बोटलिंग प्लांट, गया में इंडस्ट्रियल पार्क स्थापित किए गए है।

इन सभी प्रयासों के बावजूद बिहार योगदान राष्ट्रीय स्तर पर न्यूनतम बना हुआ है। जिसमें पीछे अनेक चुनौतियाँ विद्यमान है। हाल ही में जारी स्टार्ट-अप रैंकिंग- 2021 में बिहार की स्थिति अन्य राज्यों की तुलना में अभी भी बहुत नीचे है।

एक तरफ बिहार ने स्वच्छता, बिजली आपूर्ति में सकारात्मक सफलता पाई गई है। किन्तु भी भूमि अधिग्रहण, पर्यावरण प्रमाणन सुविधा, परियोजनाओं का सर्वेक्षण, कुशल मानव संसाधन का अपर्याप्त होना, आधारभूत संरचना की कमी, पूंजी निर्माण की समस्या, सरकार का अस्थायित्व, विश्वास बहाली में कमी के साथ-साथ अन्य प्राकृतिक समस्याएँ भी विद्यमान है।

हालांकि इन बाधाओं को दूर कर बिहार को एक स्टार्ट-अप परितंत्र हब के रूप में स्थापित करने का प्रयास लगातार जारी है। ''नेल्सन मंडेला ने ठीक ही कहा है।

''जब तक किसी काम को हम शुरू नहीं करते,
तब तक वह नामूमकिन ही लगता है।

इसलिए आवश्यकता है, अपने प्रयास को प्रारंभ करने की, दृढ़-इच्छाशक्ति की, जिसके साथ हम एक बेहतर स्टार्ट-अप परितंत्र विकसित कर विकसित बिहार के सपने को साकार कर पाएंगे और देश की प्रगति में गति प्रदान कर, संविधान में निहित मूल्यों को पूरा कर सकेंगे।